हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण

डॉ. ज्योति दुबे*

मानव जीवन का अतिरिक्त प्रकृति पर निर्भर है। प्रकृति के साये में ही जीवन की कल्पना सम्भव है। जीव–जगत की उत्पत्ति और विकास में प्रकृति अहम भूमिका निभाती है और यह निश्चय है कि इसके निरन्तर विकास के लिए प्रकृति का सन्तुलित रहना भी उतना ही आवश्यक है, किन्तु जैसे–जैसे मानव सभ्यता विकास की ओर बढ़ रही है, वैसे–वैसे प्रकृति असन्तुलित होती जा रही है।

प्रकृति और पर्यावरण के इस विनाशकारी परिवर्तन पर किसी की दृष्टि न जाती हो, ऐसा नहीं है। प्रकृति के इस विनाशकारी परिवर्तन पर गहरा मन्थन भी हमारे सामाजिक चिन्तकों द्वारा किया जाता है और साथ ही प्रकृति से प्रेम व उसकी सुरक्षा का व्यवहारिक ज्ञान भी उनके द्वारा दिया जाता रहा है, जो प्रकृति को फिर से स्वच्छ, और सन्तुलित करने की अच्छी शुरूआत है। 'मनुष्य की भावना प्रकृति के प्रति चाहे जैसी रही हो किन्तु प्रकृति उसके जीवन के सुख, दुःख हर्ष, विषाद से उसकी सहचरी बनी रहती है। सामान्य मानव का प्रकृति के प्रति भले ही शोषण या लाभ का दृष्टिकोण रहा हो किन्तु कवियों का प्रकृति से अतिशय संवेदनात्मक लगाव रहता है।'' [1]

पर्यावरण संरक्षण पर अनेक पत्र–पत्रिकाओं में चिन्तन विमर्श देखने को मिलता ही है इसके साथ साहित्य जगत में भी प्रकृति के प्रति अनुराग दिखाई देता है। 'प्रकृति प्रेम' को व्यक्त करने वाली हिन्दी काव्य के गीतों का अद्वितीय स्थान माना जा सकता है। इसमें प्रकृति के प्रति रागात्मकता एवं सौन्दर्य बोध अद्भूत है। हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत कविताओं में आदिकाल से लेकर आज तक प्रकृति के विभिन्न रूपों का चित्रण होता रहा है। ये कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के कवियों को प्रकृति प्रारम्भ से ही प्रभावित करती आ रही है।

आदिकाल से ही हिन्दी साहित्य के कवि प्रकृति के महत्व को समझते ीहे है और उसकी गरिमामय उपस्थिति से हमेशा प्रभावित भी रहे है। आदिकाल के महाकवि 'चन्दरवरदाई' ने अपने ग्रंथ 'पृथ्वीराजरासो' में प्रकृति के उद्दीपन रूप का वर्णन किया है तो भक्तिकाल में तुलसी तथा जायसी जैसे कवियों ने प्रकृति के महत्व को समझा। सूरदास द्वारा वर्णित 'कृष्णलीला' तो प्रमुखरूप से प्रकृति के विस्तृत प्रांगण में ही सम्पन्न होती है। सूरदास के साथ ही भक्तिकाल के एक और कृष्ण भक्त कवि के काव्य में प्रकृति चित्रण दिखाई देता है, वे हैं–'नन्ददास'। इनके काव्य में भी प्रकृति वर्णन कवि परम्परा के अनुसार उद्दीपन रूप में ही हुआ है। सर्वाधिक मोहक वर्णन, 'शरद–रजनी का है। रंगीली शरद के आगमन से वृन्दावन का सौन्दर्य बढ़ गया है। शरद रजनी के मुख (चन्द्रमा) को देखकर ललित–मालती

*पोस्ट डाक्टोरल फेलो हिन्दी विभाग, बी. एच. यू. वाराणसी।

वैसे ही मुकलित हो गई है जैसे गुणवती वाला नवयौवन प्राप्त कर कमनीय हो उठती है। अनेक नवीन पुष्पों के विकसित हो जाने से ऐसा प्रतीत होता है मानो छबीली शरद–रात्री हँसती हुई आ रही हो।[2]

रीतिकाल में भी प्रकृति को प्रायः सभी कवियों ने अपनी कविता का आधार बनाया है। इन कवियों ने प्रकृति चित्रण प्रायः उद्दीपन एवं आलंकारिक रूप में किया है। प्रकृति का आवलम्बन रूप में चित्रण बहुत कम हुआ है। नायक–नायिका की मानसिक दशा के अनुकूल प्रकृति भी संयोग काल में सुखद और वियोग काल में दुःखद रूप में चित्रित की गई है। परम्परागत रूप में षड्ऋतु वर्णन एवं बारहमासे का चित्रण भी इन कवियों ने किया है। बिहारी, घनानन्द, देव आदि कवियों ने प्रकृति के सौन्दर्य एवं जीवन में उसकी उपयोगिता पर काव्य रचना की है। बिहारी ने षड्ऋतु वर्णन के अन्तर्गत प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता और उसमें व्याप्त अनेक भावनाओं का चित्रित किया है।

हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण दो रूपों में पाया जाता है, पहला आलम्बन रूप में, दूसरा उद्दीपन रूप में,। आलम्बन रूप में प्रकृति का स्वतंत्र रूप से चित्रण किया जाता हैं और उद्दीपन रूप में मानवीय भावों को अधिक वेगवान तथा प्रखर बनाने के लिए प्रकृति चित्रण होता है। प्रकृति मानव की चिर सहचरी है। प्रकृति की गोद में पल कर ही हम इस संसार की सौन्दर्य का अवलोकन करते है। वैदिक साहित्य का अनुशीलन इस बात का साक्षी है कि उस काल में विराट चेतन सत्ता के प्रसंग में उषा, सविता, चन्द्र पवन आदि प्राकृतिक तत्वों का प्रचुर परिणाम में वर्णन हुआ है। आदिकाल से प्रकृति ने मानव जीवन को अनेक रूपों में प्रभावित किया है, मानव का अन्तर एवं बाह्य प्राकृतिक रूप सौन्दर्य से अभिभूत रहा है। प्रकृति के संवेदनशील नाना रूपात्मक व गतिशील रूप को देखकर कभी मानव मन विस्मय से तो कभी जिज्ञासा की भावना से कराह रहा है। कहने का आशय यह है कि आदिकाल से आजतक प्रकृति ने मानवीय चेतना और साहित्य को अत्यधिक प्रभावित किया है।

रीतिकालीन कवियों में सेनापति का प्रकृति वर्णन प्रसिद्ध है। वर्णन में उनकी प्रवृत्ति खूब रंगी है। सेनापति ने प्रकृति को उद्दीपन रूप में स्वीकार किया है किन्तु कहीं–कहीं प्रकृति वर्णन आलम्बन रूप में दिखाई देता है। उन्होंने प्रकृति को संयोग और वियोग दोनों स्थितियों में भावो द्दीप करती हुई अंकित किया है। उनकी विशेषता यह है कि उनकी चित्र बिम्ब विधायक हैं। ये बिम्ब कहीं रूप–रंग प्रधान हैं और कहीं प्रमाण–प्रधान कहीं अलंकृत रूप में सामने आते हैं और कहीं यथार्थ रूप में।

'विमल अकास घटे बारिज सेना पतिफूले कास, हित हंसन केहीय कौं।
छिति न गरद, मानौ रंगे है हरद सालि सोहत जरद, को मिलावैं हरि पीय कौं।[3]

प्रकृति वर्णन करते हुए कि ने प्रकृति के स्वरूप निरीक्षण के साथ ही सामन्तीय जीवन तथा जनसाधारण के जीवन पर पड़ने वाले उसके प्रभावों का यथार्थ चित्रण भी किया है। ग्रीष्म में राज मंदिरों में बिहार करने वाले दम्पत्ति की जीवन देखिए–

'सुंदर विराजै राज मंदिर सास ताके बीच सुख दैनी, सैनी सीरक उसीर की।
ऐसे विहरत दिन ग्रीष्म के बितवत सेनापति दम्पत्ति मया हैं रघुवीर की।''8

जो भी हो, यह स्वीकार करना होगा कि सेनापति काप्रकृति चित्रण अन्य रीतिकालीन कवियों की तुलना में पूर्ण, विशद, अपेक्षाकृत यथार्थ, सजीव चित्रात्मक और बिम्ब–विधान करने में समर्थ है। रीतिकाल की ही भाँति आधुनिक काल में भी हिन्दी के कवियों का प्रकृति प्रेम देखते बनता है। भारतेन्दु, श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, की कविताओं प्रकृति के मनोरम दृश्यों का वर्णन हम देख सकते हैं। खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास तो प्रकृति के मनोरम वर्णन के ही साथ प्रारम्भ होता है।

'दिवस का अवसान समीप था। गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु न शिखा पर थी अब राजती। कालिनी कुल बल्लभ की प्रभा।।

आधुनिक काल के अद्वितीय कवि जयशंकर प्रसाद ने तो अपनी कालजयी रचना कामायनी में प्रकृति के विनाश एवं उसके पुनः निर्माण को ही मुख्य कथावस्तु के रूप में चुना है। जिसमें स्पष्ट रूप में प्रकृति के साथ होने वाले खिलवाड़ के प्रति पाठकों को सचेत करने का प्रयास किया गया है। महाकाव्य का प्रथम श्लोक प्रकृति के विनाश से उत्पन्न परिणाम की ओर इशारा करती हैं।

आधुनिक काल में प्रकृति को नितान्त प्रेमाभिव्यक्ति का साधन मात्र नहीं समझा गया, अपितु उसकी स्वतंत्र सत्ता भी दृष्टिगत होती है। इस युग के कवियों ने प्रकृति के नाना रूपों की झांसी अपनी कविताओं में प्रस्तुत की है। आलम्बन रूप में, उद्दीपन रूप में,संवेदनात्मक रूप में, रहस्यात्मक रूप में प्रतीकात्मक रूप में, मानवीकरण रूप में हम प्रकृति चित्रण देख सकते हैं। प्रसाद कृत 'कामायनी' में प्रकृति के विभिन्न रूपों का वर्णन देखा जा सकता हैं–

'हा हाकार हुआ क्रन्दनमय कठिन, कुलिश होते थे चूर।
हुए दिगंत बधिर भीषणरव बार–बार होता था क्रूर [6] (आलम्बन रूप में)
मधुमय वसन्त जीवन वन के बह अन्तरिक्ष की लहरों में
कब आये थे तुम चुपक`से रजनी के पिछले पहरों में [7]। (उद्दीपन रूप में)

निराला के प्रकृति परक गीतों में एक ओर तो प्रकृति चित्रण किया गया है तो दूसरी ओर प्रकृति के माध्यम से मानव की भावनाओं को अभिव्यक्ति दी गई है। 'सन्ध्या सुन्दरी', 'बसन्त आया', 'बादलराग', 'जूही की कली' आदि कविताओं में प्रकृति का स्वतंत्र रागात्मक चित्रण किया गया है।

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी कवि हैं किन्तु जीवन्त प्रकृति चित्रण के लिए अधिक ख्यात रहें हैं। जनवादी कवि होने के कारण उन्होंने ग्रामीण प्रकृति के चित्र अपनी कविता में अधिक उतारे हैं जो खेत–खलिहानों से संबंधित है। पेड़–पौध, नदियाँ, पहाड़, फसल, सब कुछ उनकी कविताओं में उपलब्ध हो जाता है। 'खेत का दृश्य' नामक कविता में उन्होंने धरती को राधा के रूप में तथा कृषक

को कृष्ण के रूप में देखा है। आसमान ही इसका दुपट्टा है और 'धानी फसल' ही उसकी घंघरिया हैं–

'आसमान की ओटनी आढें,। धानी पहनें फसल घंघरिया।।
राधा बनकर धरती नाची। नाचा हंसमुख कृषक संवरिया।।'

प्रकृति के मनोरम दृश्यों को हम प्रयोगवाद कवियों की कविताओं में भी देख सकते है। मुक्तिबोध की 'विहार', नेमिचन्द्र जैन की 'डूबती संध्या', 'धूल भरी दोपहर, भारत भूषण अग्रवाल की 'प्रत्यूष बेला', प्रभाकर माचवे की 'वसन्तागमन' 'मेघ–मल्लार' 'गेहूँ की सोच' 'बादल बरसै मूसलाधार, गिरिजा कुमार, माथुर की 'आज है केसर रंगें वन', रूक कर जाती हुई रात', पानी भरे बादल, क्वार की दोपहर, रामविलास शर्मा की 'समुद्र के किनारे', अज्ञेय की भादों की उमस', 'किसने देखा चाँद', 'बदली के बाद आदि कविताओं में प्रकृति विभिन्न रूपों में दिखाई देती है। 'डूबती संध्या' नामक कविता में ग्रीष्म ऋतु की संध्या का वर्णन देखिए–

'डूबती निस्तब्ध संध्या
ग्रीष्म की तपती दुपहरी प्रबल झंझावत के पश्चात्
सुनसान शान्त उदास सन्ध्या।[8]

प्रभाकर माचवे की एक कविता 'बादल बरसै मूसलाधार' में वर्षा कालीन वातावरण का चित्रण बड़ा ही यथार्थ जान पड़ता है–

बादल बरसै मूसलाधार
चरवाहा आमों के नीचे खड़ा किसी को रहा पुकार
एक रस जीवन पावस अपरम्परा
मेघो का उस क्षितिज कूल तक पतान पाऊँ
कि कैसा घुलमिल संसार
एक धुन्ध है प्यार.....

इस प्रकार से हम देख सकते है कि हिन्दी साहित्य में प्रकृति सदा से रचना का विषय रही है। प्रकृति के कोमल एवं कठोर सभी रूपों को कविता का आधार बनाया गया है।

सन्दर्भ –

1. भ्रमरगीत सार– सं. रामकिशोर शर्मा जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ– 66
2 मध्ययुगीन काव्य साधना, डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पृष्ठ 154
3 तीसरी तरंग, छन्द 37
4. तीसरी तरंग, छन्द–17
5. प्रिय प्रवास, हरिऔध, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ 49
6. कामायनी चिन्ता सर्ग
7 कामायनी चिन्ता सर्ग
8. तारसप्तक– सं. अज्ञेय, भारती ज्ञान पीठ, नई दिल्ली पृष्ठ 60
9. वही पृष्ठ 127।